अध्याय 12

फसह, अंतिम विपत्ति, और मिस्र देश से पलायन

बारहवां अध्याय हमें अंतिम विपत्ति की कहानी और फसह की स्थापना के बारे में बताता है। इस अध्याय और अगले अध्याय में इसकी पुनरावृति, विभिन्न अवसरों पर उन्हीं निर्देशों का दोहराना इसकी महत्वता दर्शाती है।

परमेश्वर ने फसह का मेम्ना तैयार करने का और दरवाजों के अलंगों में और घर के चौखटों में उसका लहू छिड़कने का निर्देश दिया (12:1-7)। हरेक इस्राएली परिवार को एक मेम्ना भूनना था और उसको पूरा का पूरा "अखमीरी रोटी और कड़वे साग के साथ" खाना था (12:8-11)। इस घटना के घटित होने से पहले ही इस भोज के कारणों का विवरण दिया गया था: यहोवा मिस्र देश में होकर चलेगा और मिस्रियों के पहलौठों को मार डालेगा लेकिन जिन घरों में उसे लहू लगा मिलेगा वह उन घरों को छोड़ देगा (12:12, 13)।

फसह एक सालाना पर्व था, जिसे इस्राएलियों को मिस्र से छुटकारा के स्मरोणत्सव के रूप में मनाना था (12:14-20)। मूसा ने पुरनियों को परमेश्वर का निर्देश बताया (12:21-23)। उसने यह घोषणा किया कि यह पर्व इस्राएली बच्चों को मिस्र के दासता से उनको छुड़ाने के बारे में सिखाएगा (12:24-27)। इस मामले में इस्राएलियों ने यहोवा की आज्ञा मानी (12:28)।

निर्धारित समय पर, यहोवा ने मिस्र के पहलौठों को मारा (12:29, 30)। तब फ़िरौन ने मूसा और हारून से - जो कुछ उनका था, उसके साथ मिस्र देश छोड़ने के लिए कहा। अन्य सभी मिस्रियों ने फ़िरौन के साथ मिलकर, जो कुछ उन्होंने चाहा, उन्हें ले जाने के लिए कहा (12:31-36)।

यह अध्याय इस्राएलियों का मिस्र से निर्गमन के बारे में विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है (12:37-41) और उनको फसह का पर्व मनाने के बारे में आगे के निर्देशों के बारे में बताता है (12:42-49)। यह इस्राएलियों का आज्ञा मानने के बारे में एक सारांश वक्तव्य के साथ समाप्त होता है और लोगों का, यहोवा द्वारा छुटकारा की पुष्टि करता है (12:50, 51)।

फसह की स्थापना (12:1-28)

फसह का विवरण (12:1-13)

[1]फिर यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से कहा, [2]"यह महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे; अर्थात् वर्ष का पहला महीना यही ठहरे। [3]इस्राएल की सारी मण्डली से इस प्रकार कहो; इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार, घराने पीछे एक-एक मेम्ना ले रखो; [4]और यदि किसी के घराने में एक मेम्ने के खाने के लिये मनुष्य कम हों, तो वह अपने सबसे निकट रहनेवाले पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रखे; और तुम हर एक के खाने के अनुसार मेम्ने का हिसाब करना। [5]तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और एक वर्ष का नर हो, और उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से। [6]और इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रख छोड़ना, और उस दिन गोधूलि के समय इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें। [7]तब वे उसके लहू में से कुछ लेकर जिन घरों में मेम्ने को खाएँगे उनके द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाएँ। [8]और वे उसके मांस को उसी रात आग में भूँजकर अख़मीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाएँ। [9]उसको सिर, पैर, और अंतड़ियों समेत आग में भूँजकर खाना, कच्चा या जल में कुछ भी पकाकर न खाना। [10]और उसमें से कुछ भी सबेरे तक न रहने देना, और यदि कुछ सबेरे तक रह भी जाए, तो उसे आग में जला देना। [11]और उसके खाने की यह विधि है: कमर बाँधे, पाँव में जूती पहने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना; वह तो यहोवा का पर्व होगा। [12]क्योंकि उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में होकर जाऊँगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहलौठों को मारूँगा; और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूँगा; मैं यहोवा हूँ। [13]और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह लहू तुम्हारे लिए चिह्न ठहरेगा; अर्थात् मैं उस लहू को देखकर तुम को छोड़ जाऊँगा, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूँगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नष्ट न होगे।"

निर्गमन 12वें अध्याय के प्रथम अनुच्छेद में फसह के बारे में निर्देश दिया गया है। वास्तविक घटना के पूर्वानुमान में - पहलौठों की मृत्यु द्वारा उनका छुटकारा और उसके पश्चात मिस्र से छुटकारा के बारे में इस्राएलियों को समझाया गया था कि उन्हें इस घटना को कैसे स्मणार्थ बनाना चाहिए।

आयत 1. निर्गमन के लेखक ने इस बात का ध्यान रखा कि परमेश्वर ने यह निर्देश उन्हें **मिस्र देश में** दिया, जो यह बताती है कि न तो वह स्वयं व उसके मूल पाठक अब मिस्र में हैं। इस प्रकार यह निर्देश, इस्राएलियों का मिस्र छोड़ने के पश्चात, जिसे परमेश्वर ने फसह के संबंध में अतिरिक्त आज्ञा के रूप में दी थी, से विभेद करती है (गिनती 9:9-14; व्यव. 16:1-8)।

यहूदी कैलेंडर

महीने की संख्य		इब्रानी नाम	आधुनिक समकक्ष	पर्व	कृषि
पवित्र परंपरा 1	*नागरिक परंपरा* 7	अबीब (नीसान)	मार्च-अप्रैल	फसह अख़मीरी रोटी प्रथम फल	बसंत (उत्तराद्धं) वर्षा; जौ और पटसन की फसल की कटनी का आरंभ
2	8	ज़ीव (इय्यार)	अप्रैल-मई		जौ की कटनी; सूखे मौसम का आरंभ
3	9	सीवान	मई-जून	सप्ताह (पिन्तेकुस्त)	गेहूँ की कटनी
4	10	तम्मूज	जून-जुलाई		अंगूरों का फसल
5	11	आव	जुलाई-अगस्त		अंगूर, अंजीर और जैतून तैयार होना
6	12	एलूल	अगस्त-सितम्बर		अंगूर, अंजीर और जैतून की खेती
7	1	इथानीम (तिस्री)	सितम्बर-अक्टूबर	तुरहियाँ प्रायश्चित का दिन तम्बू (झोंपड़ियाँ)	पतझड़ (पूर्वाद्धं) वर्षा आरंभ; हल जोतना
8	2	बुल (मार्चेशवन)	अक्टूबर-नवंबर		गेहूँ और जौ की बुआई
9	3	किसलेव	नवंबर-दिसम्बर	हनुक्काह (स्थापन)	शरद ऋतु की वर्षा का आरंभ; कुछ भागों में बर्फ गिरना
10	4	तेबेथ	दिसम्बर-जनवरी		
11	5	शबात	जनवरी-फरवरी		
12	6	आदार	फरवरी-मार्च	पूरीम	अखरोट के वृक्षों बौर निकलना; नींबू, संतरा इत्यादि की खेती
		दूसरा आदार (आदार शेनी)	*प्रत्येक तीन वर्षों में महीना जोड़ दिया जाता है ताकि चंद्र कलेंडर सौर वर्ष के अनुरूप हो।*		

आयत 2. यहोवा ने इस पर्व को स्मरण रखने के लिए वार्षिक तिथि निर्धारित की, परंतु उसने इससे भी बढ़कर कुछ किया। इब्रियों के वर्ष का प्रथम महीना कोई सा भी क्यों न हो, जिस महीने फसह मनाया जाएगा उसी महीने से नये वर्ष प्रारंभ होगा।[1] **वर्ष का पहला महीना**, अबीब (निशान), "मार्च महीने के अंतिम भाग और अप्रैल महीना के प्रथम भाग में होता है"[2] (13:4 के टिप्पणी देखें)। अंतिम विपत्ति का समय और निर्गमन की तिथि आसानी से स्मरण रखी जा सकती है: यीशु, फसह या फसह के आस-पास की तिथि में मारा गया था, और कई लोग उस समय के तिथि के अनुसार आज ईस्टर मनाते हैं।

इससे भी बढ़कर, निर्गमन की घटना "एक राष्ट्र की उदय" की गाथा भी है। जिस तरह जुलाई 4 को अमरीका अपना वर्षगांठ मनाती है, तो उसी तरह इस्राएल भी फसह की रात्रि को अपना वर्षगांठ मनाती है। पीटर ऐन्स के अनुसार,

> इस्राएलियों के लिए मिस्र से छुटकारा एक नया शुरूआत है; अब से लेकर, जब भी वे कलेंडर देखेंगे तो यह उनके लिए उस घटना को स्मरण करने वाली बात ठहरेगी। यह उत्पत्ति और सृष्टि को जोड़ती है। निर्गमन के अवसर पर परमेश्वर के लोगों की "पुनः सृष्टि" होती है; वे एकदम नये तरीके से प्रारंभ कर रहे हैं।[3]

आयतें 3, 4. उनके छुटकारे के दिन की महत्व का विश्लेषण करने के पश्चात, यहोवा ने इस्राएलियों को इस पर्व को कैसे स्मरण रखना है के बारे में बताया।

लेखक ने पवित्रशास्त्र में **इस्राएल की मण्डली** वाक्यांश का यहाँ प्रथम बार प्रयोग किया गया है। जब परमेश्वर ने याकूब के पुत्रों को मिस्र से निकाला तो वे एक "मण्डली" (עֵדָה, *एडाह*), अर्थात परमेश्वर के एक सुसंगठित लोगों का समूह, बन गए थे। वास्तव में इस्राएली समूह "यहोवा की मण्डली" थी (गिनती 27:17; 31:16; यहोशू 22:17)।

इस्राएल के **हरेक घराने** को अपने लिए **एक मेम्ना** या बकरी का बच्चा लेना था। שֶׂה *(शेह)* शब्द का अनुवाद "मेम्ना" है, जो भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है। इस भेड़ या बकरी के बच्चे का चुनाव अबीब महीने के दसवें दिन किया जाना चाहिए था। **यदि एक घराने के लिए एक मेम्ना बड़ा हो** तो दो घराने एक साथ मिलकर एक मेम्ना ले। एक घराने को अपने निकटतम **पड़ोसी** के साथ भोजन बांटना चाहिए ताकि भोजन की बर्बादी रोकी जा सके।

आयत 5. फसह का मेम्ना **निर्दोष और पहले वर्ष का नर** होना चाहिए। "निर्दोष" का तात्पर्य यह था कि जानवर को अंधा, लंगड़ा, कुरूप, या बीमार नहीं होना चाहिए (देखें व्यव. 15:21; मलाकी 1:8)। इस प्रकार का दोष मेम्ने की मोल घटाती है और इसे यह परमेश्वर को चढ़ाए जाने के लिए ग्रहणयोग्य नहीं होती है (देखें लैव्य. 22:19-21; व्यव. 17:1)। जैसे कि पहले भी इस पर विचार किया जा चुका है, बलि का यह पशु **भेड़ या बकरियों में से लिया जा सकता था**।

आयत 6. परमेश्वर ने इस्राएलियों को आदेश दिया कि वे उसे उसके लिए जाने के चौथे दिन से **अबीब महीने के चौदहवें दिन तक रखें**।[4] इस दिन इस्राएल के सभी घरानों को अपने चुने हुए मेम्ने को **मारना** था। इसे **गोधूलि के समय** बलि करना

था। इब्रानी पाठ में यह शाब्दिक रूप से "गोधूलि के बीच" (בֵּין הָעַרְבָּיִם, *बेन हा'आरबायीन*) लिखा हुआ है। यह सूर्यास्त और अंधेरे के बीच के संक्षिप्त समय की ओर संकेत करता है। NEB में "गोधूलि और अंधेरे" के बीच का समय लिखा है। इसका समानान्तर अनुच्छेद इस प्रकार कहता है "सांझ को सूर्य डूबते समय" (व्यव. 16:6; KJV)।

आयत 7. जिस घर में फसह का मेम्ना खाया जाना था, वहाँ मेम्ने के **लहू** को **दरवाजों के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे** पर लगाना था (देखें 12:4)। "चौखट" (מַשְׁקוֹף, *मासकोप)* दरवाजे के ऊपरी सिरे पर लगा समानान्तर दण्ड है। भवन निर्माण का यह भाग लकड़ी का दण्ड या फिर पत्थर का पटिया हो सकता था। दरवाजों में लगा यह लहू सुरक्षा चिह्न के रूप में कार्य करता था (देखें उत्पत्ति 4:15; यहेज. 9:4; प्रका. 7:2, 3)। यद्यपि यह वेदी पर चढ़ाई नहीं जाती थी, फिर भी फसह का मेम्ना प्रायश्चित का बलिदान माना जाता था (12:27; 34:25)। इसका जीवित लहू उस घर में एकत्रित लोगों को बचाने के लिए लिया जाता था (देखें व्यव. 17:11)।

आयतें 8, 9. इस्राएलियों को **मांस को उसी रात** खाने की आज्ञा दी गई थी। परमेश्वर ने स्पष्ट किया कि मेम्ना को **आग में भूंजना** था। मांस को **कच्चा** नहीं खाना था; इसे पूरी तरह से पकाया जाना चाहिए था क्योंकि इस्राएलियों को किसी भी जानवर का लहू नहीं खाना था (देखें उत्पत्ति 9:4; लैव्य. 3:17; 7:26, 27; 17:10-14; 1 शमूएल 14:31-33), और न ही मांस **पानी में उबाला** जा सकता था।

इस्राएलियों को भूनी मेम्ने के साथ **अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात** खाने के लिए कहा गया था। सीनै पर्वत पर परमेश्वर ने इस्राएलियों को निर्देश दिया कि "अखमीरी रोटी" उनके लिए "दुःख की रोटी" कहलाएगी। इसका उद्देश्य लोगों को स्मरण दिलाना था कि वे "मिस्र देश से फुर्ती से निकल आए थे" (व्यव. 16:3; देखें निर्गमन 12:11, 39)। "कड़वे सागपात" इस्राएलियों को उनके मिस्र की दासता का "कड़वे" अनुभवों को स्मरण कराएगा (1:14)। मिश्ना के अनुसार, इस कड़वे सागपात में सलाद पत्ता, कासनी, चन्द्रशूर, और कुकरौंधा इत्यादि होता था।[5]

आयत 10. पूरे परिवार को फसह का मेम्ना खाना था। क्योंकि इसको उसी विशेष अवसर के लिए पवित्र किया गया था इसलिए जो कुछ **सुबह** तक न खाया जाए, उसे **आग में जला दिया जाना** चाहिए था।

आयत 11. जो इसे खा रहे थे उन्हें इसे फुर्ती से खाना था और उन्हें फुर्ती से वहाँ से निकलने के लिए तैयार रहना था: **कमर बान्धे, पांव में जूती पहने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना**। "कमर बान्धे" रहना का तात्पर्य "तुम्हारे वस्त्र पटुका से बन्धे रहना चाहिए" (NIV) ताकि पैदल चलने या दौड़ने में आसानी हो (देखें 1 राजा 18:46)। "लाठी" (מַקֵּל, *मक्केल)* यात्रा करते समय चलने में सहायक होगा। लाठी के लिए यहाँ मूसा और हारून की लाठी (מַטֶּה, *मट्टेह)* से भिन्न इब्रानी शब्द प्रयोग किया गया है। फसह का भोजन इस तरह खाने के द्वारा,

इस्राएली लोग ने यहोवा पर अपना विश्वास दोहराया था कि वह उन्हें जल्दी ही मिस्र से छुड़ाने वाला है।

फसह का उद्देश्य यह स्मरण रखने के लिए था कि यहोवा ने अंतिम विपत्ति की रात को क्या किया था। इसलिए, ठीक कहा जाए तो यह पर्व **यहोवा का फसह था।** "फसह" (פֶּסַח, *पेसाक्)* संज्ञा, "पास्का" פָּסַח *(पास्का)* क्रिया से संबंधित है जिसका अनुवाद 13, 23, और 27 आयत में "निकल जाना" किया गया है।

आयत 12. इस विपत्ति के द्वारा परमेश्वर (1) **मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहलौठों को मारेगा** (4:23; 11:5; 12:29) और (2) **मिस्र के सारे देवताओं को भी वह दण्ड देगा।** निर्गमन की पुस्तक यह स्पष्ट नहीं करती है कि प्रथम नौ विपत्तियों में किन देवी-देवताओं को निशाना बनाया गया है; परंतु लगभग सभी विपत्तियों के पीछे कई संभावनाएं जताई जा सकती है (7:21; 8:1, 2; 9:4, 5, 10, 23-25; 10:15, 21-23 की टिप्पणियां देखें)। फिर भी, यह आयत यह स्पष्ट करती है कि इस विपत्ति के द्वारा मिस्र के "सभी देवी-देवताओं" को निशाना बनाया गया था। जब मिस्र के सभी पहलौठों की मृत्यु हुई तो एक दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि मिस्री देवी-देवता मर गए। कम से कम इससे यह स्पष्ट हो गया था कि एक सच्चे परमेश्वर की क्रोध के सम्मुख वे निर्जीव, सामर्थहीन, और प्रभाव रहित थे।

आयत 13. उसी समय, परमेश्वर ने यह दिखाया कि वह जीवित और सामर्थशाली है। उसने **लहू** द्वारा सुरक्षित घरों को नुकसान न पहुँचाने के द्वारा अपने लोगों और मिस्रियों (8:22, 23; 9:4; 11:7) के बीच अन्तर किया।

अख़मीरी रोटी का विश्लेषण (12:14-20)

14"और वह दिन तुम को स्मरण दिलानेवाला ठहरेगा, और तुम उसको यहोवा के लिये पर्व करके मानना; वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर पर्व माना जाए। 15सात दिन तक अख़मीरी रोटी खाया करना, उनमें से पहले ही दिन अपने अपने घर में से ख़मीर हटा देना, वरन् जो कोई पहले दिन से लेकर सातवें दिन तक कोई ख़मीरी वस्तु खाए, वह प्राणी इस्राएलियों में से नष्ट किया जाए। 16पहले दिन एक पवित्र सभा, और सातवें दिन भी एक पवित्र सभा करना; उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए; केवल जिस प्राणी का जो खाना हो उसके काम करने की आज्ञा है। 17इसलिये तुम बिना खमीर की रोटी का पर्व मानना, क्योंकि उसी दिन मानो मैं ने तुम को दल दल करके मिस्र देश से निकाला है; इस कारण वह दिन तुम्हारी पीढ़ियों में सदा की विधि जानकर माना जाए। 18पहले महीने के चौदहवें दिन की साँझ से लेकर इक्कीसवें दिन की साँझ तक तुम अख़मीरी रोटी खाया करना। 19सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी ख़मीर न रहे, वरन् जो कोई किसी ख़मीरी वस्तु को खाए, चाहे वह देशी हो चाहे परदेशी, वह प्राणी इस्राएलियों की मण्डली से नष्ट किया जाए। 20कोई ख़मीरी वस्तु न खाना; अपने सब घरों में बिना ख़मीर की रोटी खाया करना।"

मूसा और हारून को फसह के बारे में इस्राएल की मण्डली को क्या कहना है के बारे में बताने के बाद (12:1-13), परमेश्वर ने उन्हें दूसरे पर्व के बारे में उन्हें सूचित किया (12:14-20)। फसह के पर्व के साथ इस्राएल की मण्डली को "अख़मीरी रोटी का पर्व भी मनाना था" (12:17)।

आयत 14. वह दिन संभवतः उस दिन के बारे में बताता है जब इस्राएलियों ने मिस्र से निर्गमन किया होगा (देखें 12:17)। अख़मीरी रोटी का पर्व **स्मरण दिलाने वाला** ठहरेगा ताकि इस्राएली लोग मिस्र की दासता से छुड़ाने में परमेश्वर के महान कार्यों को स्मरण रखें। फसह और अख़मीरी रोटी का संदर्भ पूरे पवित्रशास्त्र में पाया जाता है (गिनती 9:1-5; यहोशू 5:10; 2 इतिहास 30:1-27; 35:1-19; एज्रा 6:19-22; लूका 2:41; यूहन्ना 2:13; 6:4; 11:55; प्रेरितों. 12:3, 4; 20:6)। आज भी कई आधुनिक यहूदी इन पर्वों को मनाते हैं।

आयत 15. सात दिन तक, फसह के साथ अख़मीरी रोटी का पर्व मनाया जाता था। इस पर्व के दौरान लोगों **को अख़मीरी रोटी खाने की** अनुमति थी; उसने उन्हें उनके घरों से **ख़मीर** भी निकालने के लिए कहा। "ख़मीर" एक ऐसा पदार्थ है जो गूंधे हुए आटा को फुलाता है। आमतौर पर इस्राएली लोग ख़मीर मिला हुआ गूंधे आटे में से थोड़ा आटा निकालकर अगले दिन के आटा के लिए रख छोड़ते थे ताकि नया आटा के साथ वह गूंधा जाए। समय बीतने के साथ ही, ख़मीर भ्रष्टाचार और बुराई का प्रतीक बन गया और फुर्ती से फैलता चला गया (मत्ती 16:6; लूका 12:1; 1 कुरि. 5:6-8; गला. 5:9)। जो लोग अपने घरों को ख़मीर मुक्त करने की परमेश्वर के आदेश का पालन नहीं करेंगे वे **इस्राएलियों में से नष्ट किए जाएंगे**। वे मण्डली से निर्वासन या मृत्युदण्ड देकर अलग किए जाएंगे (31:14; लैव्य. 20:2, 3)।

आयत 16. अख़मीरी रोटी के पर्व को **पवित्र सभा** के द्वारा प्रारंभ और अंत किया जाना चाहिए। इस पर्व के **पहले दिन** और **सातवें दिन**, इस्राएलियों को यहोवा के सम्मुख आराधना के लिए एकत्रित होना था। इन दिनों, आवश्यक भोजन पकाने के अलावा उन्हें किसी भी प्रकार का **कार्य करने की अनुमति** नहीं थी।

आयत 17. बिना ख़मीर की रोटी का पर्व लोगों को मिस्र की दासता से **दल-दल** करके स्वतंत्र करने की घटना का स्मरण दिलाता रहेगा। दल (צְבָא, *त्साबा)* शब्द अक्सर युद्ध के लिए खड़े सेना को संदर्भित करता है। यह विश्लेषण यहाँ उचित ठहरता है, क्योंकि इस्राएली लोग कनान के लिए निकल चुके थे जहाँ उन्हें उस देश को अपने नियंत्रण में करने के लिए कई युद्ध लड़ने थे। यह तथ्य कि अख़मीरी रोटी का पर्व **एक स्थाई व्यवस्था** होने वाला था इसलिए इस बात को बार-बार दोहराया गया है (देखें 12:14)।

आयत 18. यह पर्व पहले **महीने के चौदहवें दिन की साँझ से लेकर इक्कीसवें दिन की साँझ तक** मनाया जाना था। "चौदहवाँ दिन" फसह होता था (12:6), जबकि पंद्रहवें दिन से "इक्कीसवें दिन" तक अख़मीरी रोटी का पर्व होता था।

आयत 19. इस्राएलियों का **घर**, जिसे ख़मीर मुक्त किया जाता था (12:15), इस अवस्था में **सात दिन** तक रखा जाता था - जो पूरे पर्व की अवधि होती थी।

ऐसा न करने वालों के लिए न्याय की व्यवस्था आयत 15 से दोहरायी गई है: **वह प्राणी इस्राएलियों में से नष्ट किया जाए।** इस प्रकार के व्यक्ति को इसी प्रकार दण्डित किया जाएगा, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, **चाहे वह देशी हो चाहे परदेशी।** इस्राएलियों से इस व्यवस्था का पालन करने की अपेक्षा तब भी की गई थी जब वे कनान और उस देश पर अधिकार कर लें। इसलिए "देशी" शब्द इस्राएली लोगों को दर्शाता है। इसके विपरीत, एक "परदेशी" (גֵּר, *गैर)* इस्राएलियों के बीच रहने वाला गैर-इस्राएली को दर्शाता है (12:48 की टिप्पणी देखें)।

आयत 20. इस अनुच्छेद का आखिरी वाक्य परमेश्वर ने जो पहले कह दिया है का सारांश और जिस बात पर वह जोर देता है, को प्रस्तुत करता है: **"कोई ख़मीरी वस्तु न खाना; अपने सब घरों में बिना ख़मीर की रोटी खाया करना।"**

प्रथम फसह का पर्व (12:21-28)

[21]तब मूसा ने इस्राएल के सब पुरनियों को बुलाकर कहा, "तुम अपने अपने कुल के अनुसार एक एक मेम्ना अलग कर रखो, और फसह का पशु बलि करना। [22]और उसका लहू जो तसले में होगा उससे जूफा का एक गुच्छा डुबाकर उसी तसले में के लहू से द्वार के चौखट के सिरे और दोनों अलंगों पर कुछ लगाना; और भोर तक तुम में से कोई घर से बाहर न निकले। [23]क्योंकि यहोवा देश के बीच होकर मिस्रियों को मारता जाएगा; इसलिये जहाँ-जहाँ वह चौखट के सिरे, और दोनों अलंगों पर उस लहू को देखेगा, वहाँ-वहाँ वह उस द्वार को छोड़ जाएगा, और नाश करनेवाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिये न जाने देगा। [24]फिर तुम इस विधि को अपने और अपने वंश के लिये सदा की विधि जानकर माना करो। [25]जब तुम उस देश में जिसे यहोवा अपने कहने के अनुसार तुम को देगा प्रवेश करो, तब यह काम किया करना। [26]और जब तुम्हारे बच्चे तुम से पूछें, 'इस काम से तुम्हारा क्या मतलब है?' [27]तब तुम उनको यह उत्तर देना, 'यहोवा ने जो मिस्रियों के मारने के समय मिस्र में रहनेवाले हम इस्राएलियों के घरों को छोड़कर हमारे घरों को बचाया, इसी कारण उसके फसह का यह बलिदान किया जाता है'।" तब लोगों ने सिर झुकाकर दण्डवत् की। [28]इस्राएलियों ने जाकर, जो आज्ञा यहोवा ने मूसा और हारून को दी थी, उसी के अनुसार किया।

मूसा ने लोगों को पहलौठों के मृत्यु की विपत्ति से बचने के लिए क्या करना चाहिए, के बारे में निर्देश देना प्रारंभ किया (12:21-24)। इसलिए, 12:1-20 इस विषय पर विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जबकि 12:21-28 दसवें विपत्ति की कहानी और इस्राएलियों का उससे छुटकारा दोहराता है, यह एक ऐसा वृतांत है जिस पर 11:8 के बाद विराम लग गया था। यदि कोई पाठक 11:1-8 तक पढ़ता है और फिर 12:21 से आगे पढ़ना प्रारंभ करता है तो वह इस वृतांत के किसी भी भाग से वंचित नहीं रहता है।[6]

मूसा को पर्व से संबंधित परमेश्वर का वचन मिला (12:1-20) और उन

निर्देशों को उसने इस्राएलियों से संबंधित किया (12:21-27)। इसके प्रत्युत्तर में इस्राएल के लोगों ने दण्डवत कर आराधना की और तब उन्होंने वे सब बातें की जिसे परमेश्वर ने उन्हें करने के लिए कहा था (12:27, 28)। इसके पश्चात, जिस घटना के बारे में उनको चेतावनी दी गई थी, घटा (12:29-32)।

आयत 21. जिस तरह परमेश्वर ने निर्देश दिया था वैसे ही **मूसा** ने लोगों के **पुरनियों** को एक मेम्ना चुनने के लिए निर्देशित किया (12:3)। इससे बढ़कर, ठीक समय पर, उनको **फसह का मेम्ना बलि करना था**।

आयतें 22, 23. आगे, मूसा ने इस्राएलियों को कहा कि वे मेम्ना के **लहू** को **चौखट के सिरे और दरवाजों के दोनों अलंगों में लगाएं** (देखें 12:7)। ऐसा करने के लिए उनको **जूफा की गुच्छा** का प्रयोग करना था। आर. एलेन कोल ने कहा कि परंपरा के अनुसार "जूफा" मरवा की बूटी होती है (देखें NEB)। उसने यह भी कहा, "इसका प्रयोग पूरी तरह से इसके उपयोग पर आधारित था: यह एक सामान्य पलिस्तीनी बूटी थी, जब इसको गुच्छों में बांधा जाता था तो यह एक अच्छा छिड़काव बन जाता था।[7] जूफा को बलिदान की अन्य संस्कारों में भी प्रयोग किया जाता था (लैव्य. 14:4-7, 49-52; गिनती 19:6, 18; देखें भजन 51:7)।

इसके साथ ही, मूसा ने लोगों को **भोर तक** घर के अंदर ही रहने की आज्ञा दी। जो लोग मेम्ने के लहू लगे हुए चौखटों के घरों में थे वे पूरी रात सुरक्षित रहेंगे। परमेश्वर मिस्र के पहलौठों को मारने के लिए वहाँ से **गुजरेगा**, लेकिन वह इस्राएल के पहलौठों को **छोड़ देगा**। यहोवा अपने विश्वासियों के घरों में **नाश करनेवाले** को प्रवेश नहीं करने देगा।

आम धारणा यह है कि "मृत्यु के स्वर्गदूत" ने मिस्रियों के पहलौठों को मारा। पाठ इस ओर संकेत करता है कि यहोवा इन मौतों के लिए जिम्मेदार था; उसी ने ही मिस्रियों को घात किया था (12:29) और इस्राएलियों के घरों छोड़ दिया था (देखें 11:4; 12:12)। "नाश करने वाले" का उल्लेख यह बताता है कि परमेश्वर ने मिस्रियों के पहलौठों को नाश करने के लिए एक नाश करने वाले स्वर्गदूत (या "मृत्यु के स्वर्गदूत") को प्रयोग किया था।[8] बाइबल के दूसरे अनुच्छेदों में भी नाश करने वाले स्वर्गदूत का उल्लेख मिलता है जो परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है (2 शमूएल 24:16; 2 राजा 19:35; भजन 78:49; 1 कुरि. 10:10)।

आयतें 24, 25. जैसे यहोवा ने मूसा को निर्देशित किया था उसी पर उसने जोर दिया (12:14, 17), कि फसह की **घटना** को सदा स्मरण रखा जाए। एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक इसका प्रचार किया जाए। परमेश्वर ने इस्राएल को जिस **देश** अर्थात कनान देश देने की प्रतिज्ञा की थी, वहाँ भी उनको **इस विधि** को यादगार मनाये रखना चाहिए था।

आयतें 26, 27. इसके साथ ही उसने यह भी कहा कि इस पर्व का उद्देश्य यह है कि माता-पिता अपने **बच्चों** को बताएं कि यहोवा ने **इस्राएलियों के बच्चों** को बचाकर, **मिस्रियों** के पहलौठों को मारने के द्वारा अपने लोगों को छुड़ाया था। क्योंकि बच्चे आमतौर पर जिज्ञासु होते हैं, तो यह प्रश्न पूछा जा सकता है, **"इस**

संस्कार से आपका क्या तात्पर्य है?" माता-पिता, अपने बच्चों को शिक्षा देने के अवसर पर - विशेषकर पिताओं ने - अपने पुत्र एवं पुत्रियों को उनके देश को बचाने के लिए परमेश्वर के कार्य का वर्णन किया होगा (देखें 13:8, 14; व्यव. 4:9; 6:6-9, 20-25; यहोशू 4:6, 7, 21-24)। मार्विन आर. विल्सन ने लिखा, "इस संस्कार पर प्रश्न पूछने के अभ्यास के कारण ही *हागादाह* (शाब्दिक रूप से 'वर्णन करना, या बताना') जैसे शब्दों का अभ्युदय हुआ, जिसका इस्राएल की मण्डली में अति महत्वपूर्ण स्थान था। (आज इस शब्द का प्रयोग उन पुस्तकों के लिए किया जाता है जो फसह के भोजन का विश्लेषण करते हैं।)"[9] (**फसह की बलिदान** और **गुजर जाना**, के लिए 12:7, 11 टिप्पणी देखें।)

मूसा की बातें सुनने के बाद, **लोगों ने झुककर दण्डवत और आराधना किया।** यह उनका परमेश्वर के प्रति समर्पण दर्शाता है, यद्यपि इसका अर्थ मिस्र में जीवन का भारी नुकसान दिखाता है परंतु उनके जीवन में बड़ा बदलाव दर्शाता है।

आयत 28. जब इस्राएलियों ने दण्डवत करके आराधना की तो यह प्रदर्शित करता है कि उन्होंने परमेश्वर के दिशा निर्देशन को स्वीकार किया, और **मूसा और हारून** द्वारा दिए गए उसके वचन का पालन करने के द्वारा उसके प्रति आदर दिखाया। ज्यों ही इब्रियों ने अपने मेम्ने का बलिदान और मिस्र छोड़ने की तैयारी की होगी, उनके घरों में हलचल मच गया होगा।

पहलौठे मारे गए और इस्राएली स्वतंत्र हुए (12:29-36)

[29]ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर विराजनेवाले फ़िरौन से लेकर गड्ढे में पड़े हुए बँधुए तक, सबके पहलौठों को, वरन् पशुओं तक के सब पहलौठों को मार डाला। [30]और फ़िरौन रात ही को उठ बैठा, और उसके सब कर्मचारी, वरन् सारे मिस्री उठे; और मिस्र में बड़ा हाहाकार मचा, क्योंकि एक भी ऐसा घर न था जिसमें कोई मरा न हो। [31]तब फ़िरौन ने रात ही रात में मूसा और हारून को बुलवाकर कहा, "तुम इस्राएलियों समेत मेरी प्रजा के बीच से निकल जाओ; और अपने कहने के अनुसार जाकर यहोवा की उपासना करो। [32]अपने कहने के अनुसार अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को साथ ले जाओ; और मुझे आशीर्वाद दे जाओ।" [33]मिस्री जो कहते थे, "हम तो सब मर मिटे हैं," उन्होंने इस्राएली लोगों पर दबाव डालकर कहा, "देश से झटपट निकल जाओ। " [34]तब उन्होंने अपने गुंधे-गुंधाए आटे को बिना ख़मीर दिए ही कठौतियों समेत कपड़ों में बाँधकर अपने अपने कन्धे पर डाल लिया। [35]इस्राएलियों ने मूसा के कहने के अनुसार मिस्रियों से सोने-चाँदी के गहने और वस्त्र माँग लिये; [36]और यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा के लोगों पर ऐसा दयालु किया कि उन्होंने जो-जो माँगा वह सब उनको दिया। इस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्रियों को लूट लिया।

आयत 29. जिस बात का यहोवा ने प्रतिज्ञा किया था उसे उसने पूरा किया। **आधी रात** को (देखें 11:4), अनुमान के अनुसार जिस दिन मूसा फ़िरौन के पास से

चला गया था, परमेश्वर ने **मिस्र देश ... के सब पहलौठों को मार डाला**। इस विपत्ति ने पूरे समाज, बड़े (**फ़िरौन**) से लेकर छोटे (**दासों**) तक और यहाँ तक कि **जानवरों** (11:5 की टिप्पणी देखें) को भी प्रभावित किया। राजा और बंदियों के बीच अन्तर उनके श्रेणी के आधार पर की गई है: फ़िरौन को **उसके सिंहासन** तक ऊँचा किया गया, जबकि बंदियों को **कैद खाने** तक निम्न किया गया है। "कैदखाना," इब्रानी वाक्यांश בֵּית הַבּוֹר *(बेयथ हाब्बोर)* का अनुवाद है, जिसका शाब्दिक अर्थ "गड्ढों का घर" है (देखें उत्पत्ति 40:15; यशा. 24:22; यिर्म. 37:16)।

आयत 30. विपत्ति इतनी भीषण थी कि मृत्यु **मिस्र** के सब **घरों** में आई। इस घटना की तीव्रता समझने के लिए, पाठक को भयानक दृश्य दृष्टिगोचर करना होगा जिसमें भयानक रात - भय, नुकसान, और **महा कराहना** निहित है (तुलना करें मत्ती 2:16-18)।

आयत 31. इस अंतिम विपत्ति के पश्चात, अंततः फ़िरौन ने लोगों को मिस्र से जाने के लिए कहा (6:1; 11:1)। उसने समय बर्बाद न करते हुए **आधी रात को ही मूसा और हारून** को बुलाया। यह निमंत्रण व्यंग्यात्मक है क्योंकि फ़िरौन ने मूसा को चेताया था कि यदि वह दोबारा राजा के सम्मुख आया तो वह निश्चय मार डाला जायेगा (10:28)। फिर भी, परमेश्वर द्वारा भेजा गया इस अंतिम विपत्ति ने राजा को उसके घुटनों पर गिरा दिया था। फ़िरौन ने उन्हें मिस्र देश चले जाने का आदेश दिया जो इस बात पर जोर देता है: **"उठो, निकल जाओ ... और चले जाओ।"** एक टीकाकार ने इसे इस तरह लिखा: "उठो, बाहर निकलो, और चले जाओ।"[10]

आयत 32. यह कहकर फ़िरौन ने इस्राएलियों को जो कुछ उनके पास है उन सबको लेकर निकल जाने के लिए कहा, **"अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को साथ ले जाओ।"** उसने उन्हें वैसा ही करने को आदेश दिया जैसा उन्होंने पहले निवेदन किया था (10:9, 26)। फ़िरौन ने मूसा और हारून को उसे **आशीष** देने के लिए भी कहा। यह बड़ा है हास्यास्पद है, उसने उसी परमेश्वर से आशीष मांगी जिसके बारे में उसने पहले कहा था कि वह उसे नहीं जानता है। वह पराजित हो चुका था, उसके देवता पराजित हो चुके थे, और वह यह जानता था। उसने बिना शर्त समर्पण किया।

आयत 33. मिस्रियों ने भी फ़िरौन के साथ मिलकर इस्राएलियों से जाने का आग्रह किया। वे सभी विपत्ति से प्रभावित हो चुके थे; दसवें विपत्ति के कारण सभी परिवारों को मृत्यु का सामना करना पड़ा था। यदि इस्राएली लोग उस देश में रहे तो उन्हें भविष्य में, मृत्यु के अलावा कुछ भी नहीं दिख पड़ता था। इसलिए, जबकि मिस्री लोग फ़िरौन के पाप और दण्ड के भागी हुए थे, उन्होंने जोर देकर निवेदन किया कि इस्राएली लोग चले जाएं अन्यथा **"हम तो सब मर मिटे हैं।"**

आयत 34. परिणामस्वरूप, जैसे परमेश्वर ने पहले कहा था, इस्राएलियों ने फुर्ती से मिस्र देश छोड़ा। उन्होंने **अपना गूंधा आटा** कपड़े से **कठौती** समेत बांधकर, **कंधे पर लादकर** मिस्र देश छोड़ा। ("कठौती" के लिए 8:3, 4 में उल्लेखित टिप्पणी देखें।) उन्होंने अपना सामान समेटा और चले गए।

आयत 35. कहानी के इस भाग में, कथावाचक ने इस्राएलियों का उनके पड़ोसियों से किए गए निवेदन का उल्लेख किया है। इस निवेदन का संदर्भ और यहोवा का अनुग्रह (11:2, 3; 12:35, 36) को दसवें विपत्ति का परिचय और निष्कर्ष (11:1-12:36) के रूप में प्रयोग किया गया है। आयत 35 में, NASB ने भूतकाल का प्रयोग किया है: इस्राएलियों ने वैसा ही **किया** जैसा उनको निर्देशित किया गया था, और उन्होंने अपने पड़ोसियों से उनके बहुमूल्य आभूषणों के लिए **निवेदन किया था** (देखें NKJV; NRSV; REB)। इब्रानी भाषा का "काल" क्रिया की समय या अवस्था नहीं बताता है। इसलिए, एक क्रिया का अनुवाद संदर्भ के आधार पर विभिन्न तरीके से किया जा सकता है। इस संदर्भ में, भूतकाल, जो निकट भूतकाल में किसी कार्य के पूरे होने के बारे में बताता है, के लिए अनुवाद किया गया है।

आयत 36. इस्राएलियों ने मिस्रियों से उपहार मांगे और मिस्रियों ने उदार मन से उनको उपहार दिए। वह उन लोगों से पीछा छुड़ाने के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार थे जिन्होंने उन पर भारी विपत्ति लाई थी! क्या यह सत्य है कि इस्राएलियों ने नैतिक **रूप से मिस्रियों को लूटा**? कोई यह कह सकता है कि इस्राएलियों ने अपनी दासता के बदले यह धन पाया है।

इस्राएलियों का मिस्र से कूच करना (12:37-42)

[37]तब इस्राएली रामसेस से कूच करके सुक्कोत को चले, और बालबच्चों को छोड़ वे कोई छः लाख पैदल चलनेवाले पुरुष थे। [38]उनके साथ मिली-जुली हुई एक भीड़ गई, और भेड़-बकरी, गाय-बैल, बहुत से पशु भी साथ गए। [39]और जो गूँधा आटा वे मिस्र से साथ ले गए थे उसकी उन्होंने बिना ख़मीर दिए रोटियाँ बनाईं; क्योंकि वे मिस्र से ऐसे बरबस निकाले गए कि उन्हें अवसर भी न मिला कि मार्ग में खाने के लिये कुछ पका सकें, इसी कारण वह गूँधा हुआ आटा बिना ख़मीर का था। [40]मिस्र में बसे हुए इस्राएलियों को चार सौ तीस वर्ष बीत गए थे। [41]और उन चार सौ तीस वर्षों के बीतने पर, ठीक उसी दिन, यहोवा की सारी सेना मिस्र देश से निकल गई। [42]यहोवा इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल लाया, इस कारण वह रात उसके निमित्त मानने के योग्य है; यह यहोवा की वही रात है जिसका पीढ़ी - पीढ़ी में मानना इस्राएलियों के लिये अवश्य है।

लेखक ने उनके यात्रा का विस्तृत विश्लेषण किया है: कहाँ और कैसे इस्राएली लोग गए, कितने लोग गए, और उन्होंने मिस्र कब छोड़ा इत्यादि।

आयत 37. यात्रा का प्रथम पड़ाव **रामसेस से ... सुक्कोत** तक था। "रामसेस" संभवतः भण्डार वाले नगर "रामसेस" ही है (1:11 की टिप्पणी देखें)। "सुक्कोत" का अर्थ "तम्बू" है। इन दोनों स्थानों की निश्चितता के बारे में विद्वानों में मतभेद है।

लगभग छः लाख पैदल चलने वाले पुरुषों ने मिस्र छोड़ा, जिसमें स्त्री और बच्चे शामिल नहीं हैं। यह संख्या 38:26 में वर्णित 603,550 से मिलता जुलता है और

जिनकी कुल संख्या गिनती की पुस्तक में पाई जाती है (गिनती 1:46; 2:32; 11:21)। हर एक पुरुष के लिए यदि दो या तीन लोग (एक पत्नी और बच्चों) की गिनती की जाए तो मिस्र से जो लोग निकले थे, उनकी संख्या लगभग बीस लाख से अधिक हो सकती है।

कई टीकाकारों के लिए, यह बहुत बड़ी संख्या है। वे कई प्रश्न पूछते हैं: "इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने एक ही रात में लाल समुद्र कैसे पार किया होगा?" "लोगों की इतनी बड़ी संख्या जंगल में चालीस वर्षों तक कैसे जीवित रहे होंगे?" "इतने लोगों को पर्याप्त भोजन और पानी कहाँ से मिला होगा?" बाइबल के विश्वासियों को यहाँ कोई समस्या नहीं दिखाई देती है क्योंकि वचन कहता है कि *केवल परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म के द्वारा उनके आवश्यकताओं की पूर्ति की और इस्राएली लोग बच गए।*

सबसे बड़ी समस्या पवित्रशास्त्र स्वयं अपने बारे में बोलता है। इस्राएली लोग कनान के मार्ग में पड़ने वाले खतरनाक देशों का सामना करने के लिए तैयार नहीं थे, परंतु इतनी बड़ी सेना के साथ कोई भी यह कल्पना कर सकता है कि शत्रु उनको देखकर भयभीत हो गए होंगे। फिर भी, बाइबल इस्राएलियों की गिनती के बारे में बहुत थोड़ा कहता है (व्यव. 7:7; 9:1, 2)।

इन समस्याओं के लिए क्या कहा जा सकता है? कुछ का मानना है कि इस्राएलियों की इस संख्या को हू ब हू समझना चाहिए और समस्या का स्पष्ट समाधान हो जाएगा। ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर ने इस मत का समर्थन किया है।[11] दूसरे लोगों की मान्यता है कि पुराने नियम में वर्णित इस्राएली लोगों का निर्गमन शनै-शनै एक समय तक हुआ और निर्गमन और मरुस्थल में उनका प्रवास जैसे कोई बात हुई ही नहीं थी। संशयवादी लोग पूरी तरह इस घटना का तिरस्कार करते हैं और यह दावा करते हैं कि इस्राएल कभी भी मिस्र में नहीं था और इसलिए वे कभी भी मिस्र से बाहर नहीं निकले।

विभिन्न तरीके से इन संख्याओं का विश्लेषण किया गया है। उदाहरण के लिए, यह सुझाव प्रस्तुत किया गया है कि निर्गमन और गिनती की पुस्तक की संख्या तितर-बितर जनगणना पर आधारित है जो दाऊद के दिनों का हो सकता है।[12] एक लोकप्रिय दृष्टिकोण यह है कि אֶלֶף *(एलेफ)* शब्द का अनुवाद "हजार" है, जिसके कई अर्थ हो सकते हैं, जैसे "कुल," "गोत्र" या "मण्डली" इत्यादि।[13] यद्यपि यह अनिश्चित है, लेकिन रूढीवादियों ने भी इस विचार धारा को स्वीकार किया है। इस संख्या का सांकेतिक या धर्मविज्ञानी विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है।

बाइबल के अभिलेख की समरूपता का अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। इस्राएली लोग मिस्र में इतने बढ़ गए थे कि मिस्री लोग उनसे डर गए (1:9), और उनकी कुल संख्या छोटे आंकड़ों का योग है (गिनती 1; 2)। विश्वासियों के लिए यही सर्वोत्तम होगा कि जो भी पाठ कहता है वह उसको स्वीकार करें: कि लगभग 600,000 लोगों ने मिस्र छोड़ा था। यह बड़ी संख्या इस वृतांत में दो कारणों से महत्वपूर्ण है: (1) यह इस बात का विश्लेषण करता है कि किस सीमा तक परमेश्वर

ने अपने चुने हुए परिवार को बढ़ाया, और (2) आने वाले दिनों में, इस बड़ी भीड़ की आवश्यकता की पूर्ति करने के द्वारा परमेश्वर के महा सामर्थ की पुष्टि हुई।

आयत 38. जब इस्राएलियों ने मिस्र छोड़ा तो वे वहाँ से खाली हाथ नहीं गए। वे अपने साथ **बड़ी संख्या में गाय-बैल और भेड़ बकरियाँ** भी ले गए। यह तथ्य इस बात का सुझाव देता है कि उनके मिस्र प्रवास के दौरान वे दरिद्र नहीं हुए। उनके साथ एक **मिली-जुली भीड़** भी मिस्र से निकल गई थी। "मिला-जुला" (עֵרֶב, *'एरेव)* शब्द "डांसों के झुण्ड" (עָרֹב, *'आरोव)* से संबंधित है, जो चौथे विपत्ति की मक्खियों के लिए प्रयोग किया गया है (8:17)। लोगों के इस बड़ी झुण्ड में मिस्री लोग भी रहे होंगे जो कालांतर में इस्राएलियों के मित्र बन गए होंगे या फिर जो महान सामर्थ के कार्य या चिह्न उन्होंने देखे थे, उसके कारण उन्होंने यहोवा पर विश्वास किया होगा (देखें 9:20)। दूसरे दास लोग भी रहे होंगे, ये विशेषकर सामी लोग रहे होंगे, जिन्होंने संभवतः मिस्र की इस अव्यवस्थित अवस्था का लाभ उठाकर इस्राएलियों के साथ भाग गए होंगे। जंगल की यात्रा के समय, इनमें से कुछ गैर-इस्राएलियों ने जब शिकायत की तो उन्हें "मिली-जुली भीड़" का स्वरूप दिया गया होगा (गिनती 11:4)।

आरंभ से ही, परमेश्वर के लोगों के बीच गैर-इस्राएल ("विदेशी") लोग रहने लग गए थे। क्या "एक विदेशी" फसह में भाग ले सकता है या नहीं ले सकता है उसके संबंध में यहोवा ने दिशा निर्देश दिया है (12:43-49)। कालांतर में, विदेशियों की रक्षा करने के लिए उसने व्यवस्था में कई नियम दिए (देखें 22:21; 23:9, 12)। ये तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि नये नियम में यहूदियों का अन्यजातियों के प्रति दृष्टिकोण और व्यवहार परमेश्वर की व्यवस्था पर आधारित नहीं था। बल्कि, उनका अन्यजातियों से प्रतिकूलता और उनके साथ संगति न रखना, बाद में विकसित परंपरा और पक्षपात के कारण हुआ होगा।

आयत 39. इस्राएलियों की मण्डली और मिली-जुली भीड़ ने फुर्ती से मिस्र छोड़ा, उनके पास यात्रा के लिए तैयारी करने का पर्याप्त समय भी नहीं था। मूसा ने फ़िरौन को बताया था कि विपत्ति "लगभग आधी रात" को आएगी (11:4)। यदि उसी दिन की आधी रात की बात थी तो इस्राएलियों के पास फसह का मेम्ना और फसह का भोजन तैयार करने का बहुत थोड़ा समय था, और मिस्र से बाहर निकलने के लिए तैयारी करने का बिल्कुल समय नहीं था।

जब भी इस्राएली लोग विश्राम करने के लिए ठहरे या तम्बू गाड़े, तब उन्होंने उस गुंधे **आटे** से **रोटी बनाई** जो वे कठौती समेत कपड़े में बांधकर अपने कंधे पर उठाकर ले गए थे (12:34)। चूँकि गुंधा आटा ख़मीर से ख़मीरा नहीं किया गया था, तो उन्होंने **बिना ख़मीर के ही रोटी** बनाई (देखें NIV)।

आयतें 40, 41. पाठकों को यह पाठ, इस्राएलियों का मिस्र से निर्गमन पश्चात, कहानी की महत्वपूर्णता समझने में सहायता करता है। **मिस्र** में **इस्राएल** एक या दो वर्ष के लिए नहीं, बल्कि वे वहाँ **चार सौ तीस वर्ष तक थे**। इसलिए इन लोगों का मिस्र से निर्गमन का बड़ा महत्व है। इस आयत में इस वाक्यांश का **ठीक उसी**

दिन पर जोर देना यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि उनके मिस्र प्रवास की अवधि और वहाँ से निर्गमन को लेखक ने बड़े ही महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से देखा।

मिस्र में 430 वर्ष का प्रवास कई प्रश्न खड़े करता है।

1. क्या 12:40, 41 में वर्णित 430 वर्ष का मिलान उत्पत्ति 15:13, 16 में 400 वर्ष की भविष्यवाणी से किया जा सकता है? इन दोनों आंकड़ों के मिलान में इतना कहा जा सकता है कि उत्पत्ति में यह समुचित आंकड़ा है जबकि निर्गमन अधिक सटीक आंकड़ा प्रस्तुत करता है (देखें प्रेरितों. 7:6; 13:17-20; गला. 3:17)।

2. निर्गमन 6:16-20 लेवी और मूसा के बीच केवल दो पीढ़ियों के बारे में वर्णन करता है, यह ऐसा तथ्य है जो उत्पत्ति 15:16 की भविष्यवाणी कि इस्राएलियों के "चौथी पीढ़ी" में वे मिस्र देश छोड़ेंगे, से सहमत होता है। लेवी के पिता कोहात, कोहात के पिता आमराम और आमराम के पिता मूसा थे। ये चार पीढ़ी 430 वर्ष तक कैसे रह सकते हैं?

इस प्रश्न के दो संभावित उत्तर हैं। सबसे पहले तो इन लोगों की दीर्घायु थी: लेवी 137 वर्ष; कोहात 133 वर्ष; और आमराम 137 वर्ष तक जीये। चूँकि अब्राहम का पुत्र इसहाक तब तक पैदा नहीं हुआ था जब तक कि अब्राहम की अवस्था एक सौ वर्ष की नहीं हुई, उत्पत्ति 15 में एक सौ वर्ष एक पीढ़ी दर्शाती है।[14] दूसरी संभावना यह है कि, चूँकि कभी-कभी बाइबल की वंशावली को संकुचित किया गया है तो ऐसे अवस्था में निर्गमन 6 की वंशावली की सूची में से एक या एक से अधिक नामों को छोड़ दिया गया होगा (6:20 की टिप्पणी देखें)।

3. क्या 430 वर्ष इस्राएलियों का मिस्र प्रवास की अवधि है या फिर क्या इसमें बाप दादों के प्रवास की अवधि भी सम्मिलित है? समारिटन पेंटाट्यूक और *सेप्टुजिंट* के शब्द यह इंगित करते हैं कि 430 वर्ष की अवधि "कनान देश" और "मिस्र देश" में प्रवास की अवधि है।[15] यह पाठ यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि वास्तव में इस्राएल मिस्र में केवल लगभग 215 वर्ष तक ही रहे थे।[16] फिर भी, अंग्रेजी संस्करण, इब्रानी पाठ का अनुसरण करता है जो यह बताता है कि 430 वर्ष तक इस्राएली लोग मिस्र में रहे, जो आमतौर पर अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा से सहमत होती है (उत्पत्ति 15:13)।

आयत 42. इस्राएली लोगों का निर्गमन के बारे में जानकारी देने के बाद लेखक, फसह संबंधी विषय पर लौट आता है। उसने इस बात पर जोर दिया कि जिस **रात** को दसवीं विपत्ति के द्वारा इस्राएली लोगों को मिस्र से छुटकारा मिला उसे इस्राएल को **पीढ़ी पीढ़ी में** फसह के रूप में मानना चाहिए।

इब्रानी शब्द שִׁמֻּרִים *(शिम्मूर)* जिसका अनुवाद **मनाना** किया गया है, आयत 42 में दो बार प्रयोग किया गया है। दोनों परिस्थितियों में, NASB यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि परमेश्वर के सम्मान में इस्राएली लोगों ने ही इस रात को मनाया था (देखें KJV)। इसके विपरीत, कुछ अन्य अनुवादों में *शिम्मूर* को परमेश्वर देखता है, के संदर्भ में प्रयोग किया गया है, इस प्रकार इसमें शब्दों का

हेर-फेर है (NIV; REB; NAB; NJB)। उदाहरण के लिए, NIV इसका अनुवाद इस प्रकार करता है, "क्योंकि परमेश्वर ने उस रात को उन्हें मिस्र से बाहर निकालने के लिए चौकसी की, उसी तरह सभी इस्राएलियों के लिए पीढ़ी से पीढ़ी तक परमेश्वर को महिमा देने के लिए उस रात की चौकसी करना आवश्यक है।"[17] दूसरे शब्दों में, क्योंकि **यहोवा** ने अपने लोगों की दसवीं विपत्ति की रात्रि को चौकसी की, उसी तरह **इस्राएल के संतानों** को प्रत्येक वर्ष फसह मनाने के द्वारा एक रात को जगे रहना आवश्यक है।

फसह का नियम (12:43-51)

**43फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "पर्व की विधि यह है: कोई परदेशी
उसमें से न खाए; 44पर जो किसी का मोल लिया हुआ दास हो, और तुम लोगों ने
उसका खतना किया हो, वह तो उसमें से खा सकेगा। 45पर परदेशी और मज़दूर
उसमें से न खाएँ। 46उसका खाना एक ही घर में हो; अर्थात् तुम उसके मांस में से
कुछ घर से बाहर न ले जाना; और बलिपशु की कोई हड्डी न तोड़ना। 47पर्व का
मानना इस्राएल की सारी मण्डली का कर्तव्य है। 48और यदि कोई परदेशी तुम
लोगों के संग रहकर यहोवा के लिये पर्व अर्थात्, लांघनपर्व को मानना चाहे, तो
वह अपने यहाँ के सब पुरुषों का खतना कराए, तब वह समीप आकर उसको माने;
और वह देशी मनुष्य के तुल्य ठहरेगा। पर कोई खतनारहित पुरुष उसमें से न खाने
पाए। 49उसकी व्यवस्था देशी और तुम्हारे बीच में रहनेवाले परदेशी दोनों के लिये
एक ही हो।" 50यह आज्ञा जो यहोवा ने मूसा और हारून को दी उसके अनुसार सारे
इस्राएलियों ने किया। 51और ठीक उसी दिन यहोवा इस्राएलियों को मिस्र देश से
दल दल करके निकाल ले गया।**

फिर से वृतांत विराम लेता है, और फसह के बारे में और अधिक जानकारी प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से 12:43-47, उनके बारे में जानकारी देता है जो इस पर्व में भाग ले सकते हैं। एक "मिली-जुली भीड़" का इस्राएलियों के साथ मिस्र से बाहर निकलने के कारण इस तथ्य के बारे में विस्तृत जानकारी आवश्यक हो गया था।

आयत 43. परमेश्वर ने अपने लोगों को बताया कि **कोई भी परदेशी** फसह में से **न खाए**। एक "परदेशी" (נֵכָר, *नेकार)* विदेशी देश का गैर-इस्राएली नागरिक था। कनान देश में इस्राएली लोगों के बसने के बाद, वह संक्षिप्त अवधि के लिए अपने देश जा सकता था। एक "परदेशी" का "मुसाफिर" (12:45) और "अजनबी" (12:48) में अंतर किया जाना चाहिए, परदेसी वह व्यक्ति है जो इस्राएलियों के बीच एक लम्बी अवधि से रहा हो और इस कारण जिसने उनके साथ एक नजदीकी संबंध बना लिया था।[18] (नोट: "मुसाफिर" (12:45) और "अजनबी" (12:48) के लिए हिंदी बाइबल में एक ही हिंदी शब्द "परदेशी" प्रयोग किया गया है।)

आयत 44. यदि एक परदेशी फसह के भोज में शामिल न हो सके तो उसका

इस्राएली स्वामी **दास** का खतना करके उसे फसह का भोजन खाने के योग्य बना सकता था। दास का खतना करने से उसकी पहचान परमेश्वर के वाचा के लोगों के साथ हो जाती थी (उत्पत्ति 17:10)। **पैसे से खरीदा गया** दास, उसके स्वामी के घर में जन्मा दास से अलग था (उत्पत्ति 17:12, 23)।

आयत 45. "परदेशी" (12:43) के साथ-साथ, परदेशी (मुसाफिर) और **मज़दूर** भी फसह का भोजन नहीं खा सकते थे। इब्रानी शब्द תּוֹשָׁב *(थोसाव)* जिसका अनुवाद "मुसाफिर" या "प्रवासी" किया गया है, "मजदूरों" (שָׂכִיר, *साकीर)* के युगल में अन्य अनुच्छेदों में भी पाया जाता है (लैव्यव्यवस्था 22:10; 25:6, 40)। संभवतः यह शब्द दिहाड़ी मजदूरों के लिए प्रयोग किया जाता होगा जो इस्राएली लोगों के बीच कार्य के तलाश में घूमते-फिरते रहते थे। स्पष्ट रूप से "मुसाफिर," आयत 48 के "अजनबी" की तुलना में "अधिक अस्थाई और दूसरों पर निर्भर" रहने वाले थे।[19]

आयत 46. यहाँ पर, फसह के भोज से संबंधित तीन नियम बताये गए हैं: बलि के मेम्ने के मांस को **एक ही घर में खाना था**, पूरा मांस खाना था, और उसकी कोई भी हड्डी तोड़ी नहीं जानी चाहिए थी। इस नियम की महत्वत्ता कई वर्षों के बाद पता चला (देखें गिनती 9:12; भजन 34:20; यूहन्ना 19:36)।

आयतें 47, 48. फसह की प्राथमिक शर्त यह थी कि यह इस्राएलियों के लिए एक स्मरणार्थ पर्व ठहरे: पर्व मानना **इस्राएल की सारी मण्डली** का कर्तव्य था। फिर भी, यदि एक **परदेशी** (גֵּר, *गैर)* और उसके घराने के **सारे पुरुषों** का **खतना किया जाता** था - या फिर दूसरे शब्दों में कहा जाए कि यदि वे **स्थानीय** इस्राएली बनते हैं - तब वे अन्य इस्राएलियों के साथ धार्मिक सेवाओं में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करते थे। जब एक बार "परदेशी" का खतना हो जाता था तो वह भी स्थानीय इस्राएलियों के समान, एक ही नियम (अनुमान के अनुसार, उसी व्यवस्था के अनुसार उसको भी सुरक्षा प्रदान की जाती थी) से बंध जाता था।

आयत 49. दोहरी कानून व्यवस्था नहीं होनी चाहिए थी - **एक व्यवस्था** स्थानीय इस्राएलियों के लिए और दूसरा **परदेशियों** के लिए नहीं होनी चाहिए थी। जब एक "परदेशी" या "अजनबी" (NIV) का खतना हो जाता था तो वह भी इस्राएली माना जाता था। वह भी स्थानीय इस्राएलियों के साथ अब्राहम, इसहाक, और याकूब को "हमारे पिता" कहकर पुकार सकता था। इस्राएल का इतिहास उसका इतिहास हो जाता था। वह भी दूसरे इस्राएलियों के साथ उसी प्रतिफल का भागी बन जाता था और दूसरे इस्राएलियों से जो अपेक्षा की जाती थी, वैसे ही उससे भी वही जिम्मेदारी निभाने की अपेक्षा की जाती थी (12:19; लैव्य. 16:29; 17:8, 15; 18:26; 19:33, 34; 20:2; 22:18; 24:16, 22; गिनती 9:14; 15:14-16, 26, 29, 30)। कालांतर में, इस तरह के लोगों को, जिन्होंने यहूदी धर्म अपना लिया था, को "प्रोसेलाईट या धर्मांतरित" करके संबोधित किया गया।

आयतें **50, 51.** फसह का अतिरिक्त निर्देश देने के बाद, लेखक ने, 12:28 में जैसा किया था वैसे ही अभी तक जो कुछ उसने कहा था, उसको उसने एक ही

वाक्य में सारांश के रूप में व्यक्त कर दिया है। इस्राएलियों ने **मूसा और हारून** द्वारा दिए गए **यहोवा** के वचन का पालन किया।

ठीक उसी दिन (इस दिन के बारे में 12:41 में स्पष्ट किया गया है) परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाला। वस्तुतः लोगों को **दल दल** करके बाहर निकाला गया। इस विषय पर इसका दूसरा संभावित अनुवाद "सेना" (NKJV), और "श्रेणी" (NIV) है। इब्रानी शब्द צָבָא *(त्सवा)* जिसका अनुवाद "दल" किया गया है, "एक संस्थान है, जो मुख्यतः पुराने नियम में सेना के उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। [6:26 का], संदर्भ ऐसा जान पड़ता है जैसे इस्राएल के पुत्रों को गोत्र और लोगों के उप समूह में नियुक्त किया गया था।"[20] चूंकि यह शब्द सैनिक संस्थान पर अधिक जोर देता है, तो इससे यह अपेक्षा की जाती है कि परमेश्वर के लोगों को उस देश के लिए युद्ध लड़ना पड़ेगा जिसे वह उन्हें देना चाहता था (12:17 पर की गई टिप्पणी देखें)।

अनुप्रयोग

"मसीह, हमारा फसह" (अध्याय 12)

जेम्स बर्टन कॉफमैन के अनुसार निम्न लिखित विशेषता के कारण, फसह का मेम्ना, मसीह जो "हमारा फसह," है, का प्रतीक था (1 कुरि. 5:7): (1) वह निर्दोष था (2) निर्दोष ने दूसरों के पापों के लिए दुःख उठाया (3) वह मृत्यु तक परमेश्वर के अधीन रहा और उसने कोई शिकायत नहीं की। (4) उसकी कोई भी हड्डी नहीं तोड़ी गई। (5) यह मेम्ना पृथ्वी की नींव डालने से पहले ही बलि किया गया था। परमेश्वर ने उसे "पृथ्वी के अस्तित्व से पहले" ही भेजने की ठानी थी। (6) फसह के भोज के द्वारा ही इस्राएलियों को छुटकारा मिला था। यह प्रतीकात्मक रूप से मसीह की देह "खाने" के द्वारा (यूहन्ना 6:56) आज लोग उद्धार प्राप्त करते हैं। (7) मेम्ने को बलि करने से पहले चार दिन तक अलग रखा जाता था। मसीह भी क्रूसीकरण से पहले चार दिन तक यरूशलेम में था। (8) यह नर मेम्ना बिना किसी दाग या दोष के अपने जीवन के चरमोत्कर्ष पर था। यीशु मसीह भी वैसा ही था। (9) दोनों मेम्ने (प्रथम सदी में) और प्रभु यीशु मसीह अपराह्न 3:00 बजे मारे गए (10) मेम्ना और यीशु मसीह, दोनों आबीब (निशान) महीने के चौदहवें दिन मारे गए (11) दो बड़े संस्कारों, प्रभु भोज और यहूदी फसह, का निर्धारण दो बड़े छुटकारों को स्मरणीय बनाने के लिए, घटना घटित होने के पहले ही स्थापित किया गया था।[21]

"जब मैं लहू देखूँगा" (12:13, 23)

पूरी बाइबल में छुटकारे की "रक्त रंजित धागे" दिखाई देते हैं। पुरातन काल से लेकर आधुनिक काल तक मानव जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर ने लहू को अति महत्वपूर्ण ठहराया है। निर्गमन में भी लहू ही है जिसके द्वारा उद्धार मिलता

है। इस्राएली लोगों का छुटकारा हमारे उद्धार की कथा के समानांतर है।

इस्राएली लोगों की कथा। (1) मृत्यु सिर पर थी। पहिलौठों की मृत्यु दसवीं विपत्ति थी। इस विपत्ति का उद्देश्य फ़िरौन और मिस्रियों को इस्राएलियों को जाने देने के लिए विवश करना था। इस विपत्ति के उद्देश्य की पूर्ति हुई। मिस्र के हर एक घर में उस रात को मृत्यु आई। जब मिस्रियों ने इस विपत्ति की गम्भीरता समझी, तो उन्होंने न केवल इस्राएलियों को जाने दिया बल्कि उन्होंने उनसे जाने के लिए विनती की। उन्होंने इस्राएलियों को बहुमूल्य उपहार देकर जाने के लिए उत्साहित किया।

(2) परमेश्वर ने उनके छुटकारे का मार्ग खोला। उसी समय जब उसने मिस्रियों के पहिलौठों को घात करने की ठानी, तो परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए बच निकलने का मार्ग खोला। उस विपत्ति से बचने के लिए, हर एक परिवार को एक मेम्ना - एक निर्दोष मेम्ना, मारना था - और उनको उसका लहू अपने घरों के दरवाजों के दोनों अलंगों और चौखट में लगाना था। परमेश्वर ने कहा, "मैं उस लहू को देखकर तुम्हें छोड़ जाऊँगा" (12:13)।

(3) इस्राएलियों को कुछ करना था। इस्राएलियों को अपने उद्धार के लिए कुछ भूमिका निभानी थी। परमेश्वर ने जो उन्हें करने के लिए कहा था, उनको वह करना था। उसकी आज्ञाओं को मानने के द्वारा उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया था कि वे परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। उन्होंने मेम्नों को मारा और उनके लहू द्वारा सुरक्षित घरों के भीतर वे रहे।

(4) तब इस्राएल बच गया। उस रात घात करने वाले ने उनके पहिलौठों को नुकसान नहीं पहुँचाया। पूरे देश में जो घात किए गए थे उनके लिए बड़ा कोहराम मचा, परंतु इस्राएलियों के घरों में सभी जीवित थे।

(5) परमेश्वर ने इस घटना को स्मरणीय बनाए रखने के लिए एक पर्व नियुक्त किया। परमेश्वर ने फसह का पर्व ठहराया ताकि वे लोग यह स्मरण रखें कि उसने उस रात को उनके लिए क्या किया था।

हमारी कहानी। (1) मृत्यु सिर पर थी। पाप की मजदूरी तो मृत्यु है (रोमियों 6:23); पापी मृत्यु के भागी हैं। जिन्होंने पाप किया है, वस्तुतः, वे मृत्युदण्ड के अधीन हैं। अंततः जो पापी पश्चाताप नहीं करेंगे, उन्हें द्वितीय मृत्यु अर्थात अनंतकाल की मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।

(2) परमेश्वर ने मृत्युदण्ड से बचने का मार्ग निकाला। उस मार्ग के लिए लहू आवश्यक है। यीशु "परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (यूहन्ना 1:29)। वह हमारा पास्कल मेम्ना, हमारा "फसह" है (1 कुरिन्थियों 5:7), जिसका लहू हमारे उद्धार के लिए बहाया गया। नया नियम हमें सिखाता है कि हमारा उद्धार बैलों और बकरों के लहू से नहीं (इब्रानियों 10:4), बल्कि यीशु मसीह के लहू से हुआ है!

(3) हमें कुछ करना है। क्या हमें हमारे उद्धार के लिए कुछ भूमिका निभानी है? हाँ, हम परमेश्वर के निर्देशों का पालन कर उस पर अपना विश्वास जताते हैं

और हमारे उद्धार के लिए उसके उपाय पर भरोसा करते हैं। जब हम मसीह पर अपने विश्वास का अंगीकार और अपने पापों से पश्चाताप करते हैं, तब हम उसके लहू के द्वारा बचाए जाते हैं और मसीह में उसकी मृत्यु के द्वारा हमारा बपतिस्मा होता है (देखें प्रेरितों. 2:38; रोमियों 5:9; 6:3; 10:9, 10)।

(4) तब हमारा उद्धार होता है। जब प्रभु की आज्ञाओं का पालन करते हैं, तब हम यह जानकर आनंदित हो सकते हैं कि हमारे सारे पाप मेम्ने के लहू से धो दिए गए हैं!

(5) परमेश्वर इसे स्मरणीय बनाता है। इस्राएलियों के छुटकारे की कहानी के समान, परमेश्वर ने एक वार्षिक नहीं बल्कि साप्ताहिक स्मरणीय पर्व नियुक्त किया है। प्रभु भोज, मसीह की देह और लहू का बलिदान, ताकि हम यह स्मरण रख सकें कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा हमारा उद्धार करने के लिए क्या-क्या किया है।

परमेश्वर अभी भी कहता है, "जब मैं लहू देखूँगा, तो मैं उसे छोड़ दूँगा।" जब हम मसीह के लहू से ढांपे गए हैं, तो वह हमें हमारे पापों के लिए जिम्मेदार नहीं ठहरायेगा, चाहे वे कुछ भी क्यों न हो! निश्चय, आप वह आशीष पाना चाहेंगे! "क्या तुम मसीह पास गए कि होवे दिल पाक? क्या तुम सोते में साफ हुए हो?"[21]

ख़मीर हटाना (12:15)

अख़मीरी पर्व के समय इस्राएलियों को अपने घरों से ख़मीर हटाना था। आज, जब यहूदी लोग फसह मनाते हैं तो वे अपने घरों से परंपरा के अनुसार उन सारी वस्तुओं को हटाते हैं जो ख़मीर के रूप में प्रयोग की जाती हो। पौलुस का 1 कुरिन्थियों 5:6-8 में दिए गए निर्देश पुराने नियम की मांग को स्पष्ट करता है। हम कलीसिया की अनुशासन को मानकर "पुराना ख़मीर हटाते हैं" और हम अनुशासन का अभ्यास करके "गुंधे" आटे को "ख़मीरा" होने से बचाते हैं। अर्थात् हमें कलीसिया को अपश्चातापी सदस्य के नकारात्मक व्यवहार के प्रभाव से बचाना चाहिए। हम पौलुस की आज्ञाओं को हर एक व्यक्ति के जीवन में भी लागू कर सकते हैं: हम सबको अपने जीवन में दुष्टता के प्रभाव से छुटकारा पाना चाहिए।

समाप्ति नोट्स

[1]इसी बात से मिलती-जुलती बातें वे लोग भी करते हैं जो अपने कलेण्डर की तिथि को अपने धर्म के आरंभ से मानते हैं - मसीह के अनुयायी भी यीशु के पैदा होने की तिथि से प्रारंभ करते हैं (ई.पू./ई. का प्रयोग) और मुसलमान लोग भी ऐसा ही करते हैं जिनके कलेण्डर की तिथि मुहम्मद का हीजरा (भागना) ई. सन् 622 से प्रारंभ होता है। [2]हेरल्ड लिंडसेल, नोट आन निर्गमन 12:2, *NRSV हार्पर स्टडी बाइबल,* प्रकाशक वर्लीन डी. वरब्रूग्गे (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1991), 94. [3]पीटर ऐन्स, *एक्सोडस,* द NIV अप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन, 2000), 247. [4]प्रथम फसह के समय, यह स्पष्ट है कि इन निर्देशों के दिए जाने और विपत्ति के आने के बीच चार दिन का अंतर नहीं था, क्योंकि इस्राएलियों के पास मिस्र छोड़ने के लिए पर्याप्त समय नहीं था (12:39)। [5]मिश्ना *पेसाहीम* 2.6. [6]यह तथ्य, जैसे बहुत से टीकाकारों का मानना है, उस स्रोत का अस्तित्व को प्रमाणित नहीं करता है जिसे निर्गमन के लेखक या सम्पादक ने

प्रयोग किया हो। बल्कि, विपत्ति का वास्तविक वृतांत से पहले पर्व से संबंधित निर्देशों का उल्लेख को लेखक के कथावाचक शैली के रूप में देखा जा सकता है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने निर्देशों और व्यवस्था को वृतांत भाग में उल्लेख किया है। [7]आर. एलेन कोल, *एक्सोडसः एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इल्लिनोय: इंटर-वार्सिटी प्रेस, 1973), 110. [8]उपरोक्त। [9]मार्विन आर. विल्सन, "पासओवर," *दि इंटरनेशल स्टेंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडिया,* संसोधित संस्करण, सम्पादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:676. देखें मिष्णा *पेसाहीम* 10.4. [10]जॉन आई. दुरहैम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, खण्ड 3 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1987), 167.

[11]ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, *ए सर्वे आफ ओल्ड टेस्टामेंट इंट्रोडक्सन, संशोधित संस्करण* (शिकागोः मूडी प्रेस, 1974), 236-38. [12]नहूम एम. सारना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडसः दि ओरीजिंस आफ बिब्लिकल इस्राएल* (न्यू यॉर्कः शोकेन बुक्स, 1996), 102. यह असंभव सिद्धांत जान पड़ता है। इस बात की परिकल्पना कठिन है कि मूसा ने इस्राएलियों की गिनती की और चार सौ वर्ष से भी पीछे की संख्या को अपने लेख में जोड़े। [13]कोल, 112; ब्रूस सी. बर्क, "नंबर," *न्यू स्टैंडर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडीया,* संशोधित संस्करण, सम्पादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:557-58. [14]रॉनाल्ड एफ. यंगब्लड, *एक्सोडस,* एवरी मेंस बाइबल कमेंट्री (चिकागोः मूडी बाइबल इंस्टिट्यूट, 1983), 70. [15]दुरहैम, 172. [16]इस्राएलियों का मिस्र प्रवास और निर्गमन की तिथि की तुलना करने वाले तालिका के लिए, देखें "कमपैरिजन आफ क्रोनोलॉजिकल सिस्टम्स," जॉन एच. वाल्टन, *क्रोनोलॉजिकल एण्ड बैकग्राउंड चार्ट्स आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1994), 99. [17]जॉन आई. दुरहैम ने अपने टीका में इसका इस प्रकार अनुवाद किया है, "उन्हें मिस्र से बाहर निकालने के लिए, यह यहोवा की संस्मरण की एक रात है - इसलिए, यह यहोवा की रात है, एक ऐसी रात जो इस्राएल के सब पीढ़ियों को स्मरण करना अवश्य है।" दुरहैम ने यहोवा का चौकसी करने को परमेश्वर का अपने लोगों के साथ अपनी प्रतिज्ञा बनाए रखने को जोड़ा है। (दुरहैम, 169, 173.) कोल ने यहोवा की चौकसी को "वाचनाइट सर्विस" कहा है। (कोल, 113.) [18]फ्रांसिस ब्राऊन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *द ब्राऊन-ड्राइवर-ब्रिग्गस हिब्रू एण्ड इंगलिश लेक्सीकन* (बॉस्टनः हूटन, मिफ़्लीन एण्ड कम्पनी, 1906; पुनर्मुद्रित, पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेंड्रीक्शन पब्लिशर्स, 1997), 444. [19]दुरहैम, 81. [20]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेंट्री आन एक्सोडस, द सेकेंड बुक आफ मोजेज* (अबीलीन, टेक्सॉसः ए सी यू प्रेस, 1985), 162 से उधृत।

[21]ई. ए. हॉफमैन, "हैव यू बीन टू जीजस?" *सॉग्स आफ फैथ एण्ड प्रैज,* संकलित और सम्पादित एल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कम्पनी, 1994)।